भीष्म साहनी

साहित्य और जीवन- दर्शन

डॉ. सुभाष चन्द्र

भीष्म साहनी

साहित्य और जीवन-दर्शन

डॉ. सुभाष चंद्र

अनुक्रम

पहला अध्याय

जीवन दर्शन और साहित्य 8

दूसरा अध्याय

भीष्म साहनी का जीवन और साहित्य 40

तीसरा अध्याय

भीष्म साहनी के साहित्य में समाज 97

चौथा अध्याय

भीष्म साहनी के साहित्य में राजनीति 141

पांचवा अध्याय

भीष्म साहनी के साहित्य में धर्म 190

छठा अध्याय

भीष्म साहनी का साहित्य चिन्तन 237

सातवां अध्याय

उपसंहार 278

प्राक्कथन

स्वतंत्रता के बाद के साहित्यकारों में भीष्म साहनी का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता है इतने लम्बे समय से बिना किसी शोर-शराबे के साहित्य से सक्रिय रूप से जुड़े रहे। स्वतंत्रता के बाद साहित्य का अध्ययन आन्दोलनों के माध्यम से हुआ, परन्तु भीष्म साहनी की विविधतापूर्ण रचनाओं को किसी आंदोलन की सीमा में नहीं बांधा जा सका। यह साहित्यिक यात्रा कई मोड़ों तथा पड़ावों से गुजरी है। कहानीकार से उपन्यासकार तथा नाटककार के रूप में अपनी पहचान बनाई। अपने समाज की सशक्त तथा समग्र अभिव्यक्ति के लिए नए रूप तथा नए तरीकों की खोज की। भीष्म साहनी ने साहित्य में समाज के बदलते ढांचे में बदलते सामाजिक संबंधों, मध्यवर्ग के बदलते स्वरूप एवं चरित्र, पूंजीवादी लोकतंत्र में पनपती राजनीतिक संस्कृति को स्थान दिया।

अब तक भीष्म साहनी के आठ कहानी संग्रहों (भाग्यरेखा, पहला-पाठ, पटरियां, भटकती राख, चू, निशाचर, पाली) में लगभग 125 कहानियां, छ: उपन्यास (झरोखे, कड़ियां, तमस, बसन्ती, मय्यादास की माड़ी, कुन्ती), चार नाटक (हानुश, कबिरा खड़ा बाज़ार में, माधवी, मुआवजे), एक जीवनी (मेरे भाई बलराज) तथा लगभग 15 अनुदित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, परन्तु प्रसिद्ध रचनाओं ‘‘चीफ की दावत’’, ‘‘तमस’’, ‘‘वांड यू’’ आदि पर चर्चा हुई है या स्वतंत्रता के बाद के साहित्य

पर विचार करते हुए प्रसंगवश उनके उपन्यासों नाटकों या कहानियों पर छिटपुट चर्चा हुई है। इनके समस्त साहित्य का सांगोपांग विवेचन करके, इनकी रचनाशक्ति की सीमाओं और संभावनाओं पर कोई स्वतंत्र आलोचना नहीं लिखी गई। भीष्म साहनी के 60 वर्ष पूरे होने पर राजेश्वर प्रसाद सक्सेना के संपादन में 'भीष्म साहनी: व्यक्ति और रचना' नामक एक मात्र महत्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशित हुई है। जो भीष्म साहनी के व्यक्तिगत जीवन से, उनके व्यक्तित्व से परिचय करवाती है। इस पुस्तक की सीमा है कि यह विषयी-प्रधान (Subjective) अधिक हो गई है। दूसरे यह पुस्तक 1980 में प्रकाशित हुई है जिसके बाद साहनी की कला तथा रचनात्मक प्रतिभा निखरकर सामने आई है।

साहित्य पर जीवन-दर्शन का गहरा प्रभाव पड़ता है। जीवन-दर्शन यथार्थ के चयन, उसके निरीक्षण-विश्लेषण एवं प्रस्तुतिकरण पर प्रभाव डालकर रचना को रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किसी रचना की अर्थक्तता एवं मूल्यावत्ता उसमें निहित जीवन-दर्शन से है। साहित्यकार के जीवन-दर्शन की पहचान के लिए उसके समस्त साहित्यकार के जीवन-दर्शन की पहचान के लिए उसके समस्त साहित्य का सांगोपांग अध्ययन है। इसी से उसके जीवन-दर्शन को रेखांकित किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में भीष्म साहनी के साहित्य में जीवन-दर्शन को समझने के लिए मेरा ध्यान रचना के माध्यम की सीमाओं के साथ विषय वस्तु की समग्रता पर रहा

है। भीष्म साहनी का निरन्तर विकास इनकी रचनाओं का विषय-वस्तु विस्तार एवं प्रस्तुतिकरण के आधार पर रेखांकित किया जा सकता है। विषयगत विस्तार तथा मध्यवर्गीय जीवन के दायरे को छोड़कर जन-सामान्य की रचनाओं में अभिव्यक्ति इसके सूचक हैं। भीष्म साहनी के जीवन-दर्शन की समुचित प्रस्तुति के लिए शोध-प्रबंध को सात अध्यायों में विभाजित किया है।

पहले अध्याय ''जीवन-दर्शन और साहित्य'' में जीवन दर्शन को परिभाषित करते हुए इसके नियामक तत्त्वों तथा इसकी पहचान के बिन्दुओं पर विचार किया है।

दूसरे अध्याय ''भीष्म साहनी का जीवन और साहित्य'' में भीष्म साहनी के व्यक्तिगत जीवन, पारिवारिक एवं सामाजिक परिस्थितियों में रचनात्मक व्यक्तित्व के निर्माण के प्रक्रिया तथा उनके साहित्य का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

तीसरे अध्याय ''भीष्म साहनी के साहित्य में समाज'' में समकालीन सामाजिक परिदृश्य को स्पष्ट करते हुए भीष्म साहनी के साहित्य में व्यक्त उसके स्वरूप को पूंजीवादी-व्यवस्था, मध्यवर्ग के चरित्र, निम्नवर्ग के स्थिति, नारी की स्थिति को दर्शाया है।

चौथे अध्याय 'भीष्म साहनी के साहित्य में राजनीति'' में साहित्य और राजनीति के संबंध, समकालीन राजनीतिक परिदृश्य को दर्शाते हुए भीष्म साहनी के साहित्य में राजनीति के स्वरूप को उद्घाटित किया है। प्रशासन व्यवस्था, चुनाव-

व्यवस्था, पक्ष-विपक्ष, जन-चेतना, अंग्रेजी शासन, राजनीति का अपराधीकरण, शासन व्यवस्था और कलाकार बिन्दुओं के माध्यम वर्तमान राज्य के वर्गीय चरित्र को दर्शाया है।

पांचवें अध्याय ''भीष्म साहनी के साहित्य में धर्म'' में धर्म की अवधारणा के विषय में विभिन्न मतों को स्पष्ट करते हुए भीष्म साहनी के साहित्य में धर्म के स्वरूप को दर्शाया है। इसमें धर्म और नैतिकता के परस्पर संबंधों, धर्म और भाग्यवाद, धर्म और वर्ग तथा धम और साम्प्रदायिकता के चरित्र को स्पष्ट किया है।

छठ अध्याय "भीष्म साहनी का साहित्य चिंतन'' में भीष्म साहनी की व्यवहारिक कला-प्रतिभा, उनके कला-शिल्प तथा नाट्क-शिल्प को रखा है तथा उनकी इतिहास दृष्टि, व्यवस्था और कलाकार और आलोचना, शाश्वत सत्य और साहित्य, लेखन तथा लेखक संगठन के बोर मैं साहनी के विचारों को रखा है।

सातवें अध्याय ''उपसंहार'' में भीष्म साहनी के साहित्य में व्यक्त जीवन विषय पर अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों को दिया है तथा उनके जीवन-दर्शन विकास को रेखांकित किया है।

इस शोध-प्रबंध के सम्पन्न होने का श्रेय हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष डा. राजदेव सिंह का है जिनकी न्याय-दृष्टि ने मुझे तथा इस शोध कार्य को संकट की गहरी खाई से निकाला तथा निर्देशक के रूप में मेरे विचारों को प्रोत्साहन दिया। यह शोध-प्रबंध